ॐ गु गु गुरवे नमः

।।श्री सिद्धि मन मानस विहारिणी विहारीभ्याम् ।।

झूलन बहार

श्री राम हर्षण सेवा संस्थान अयोध्या
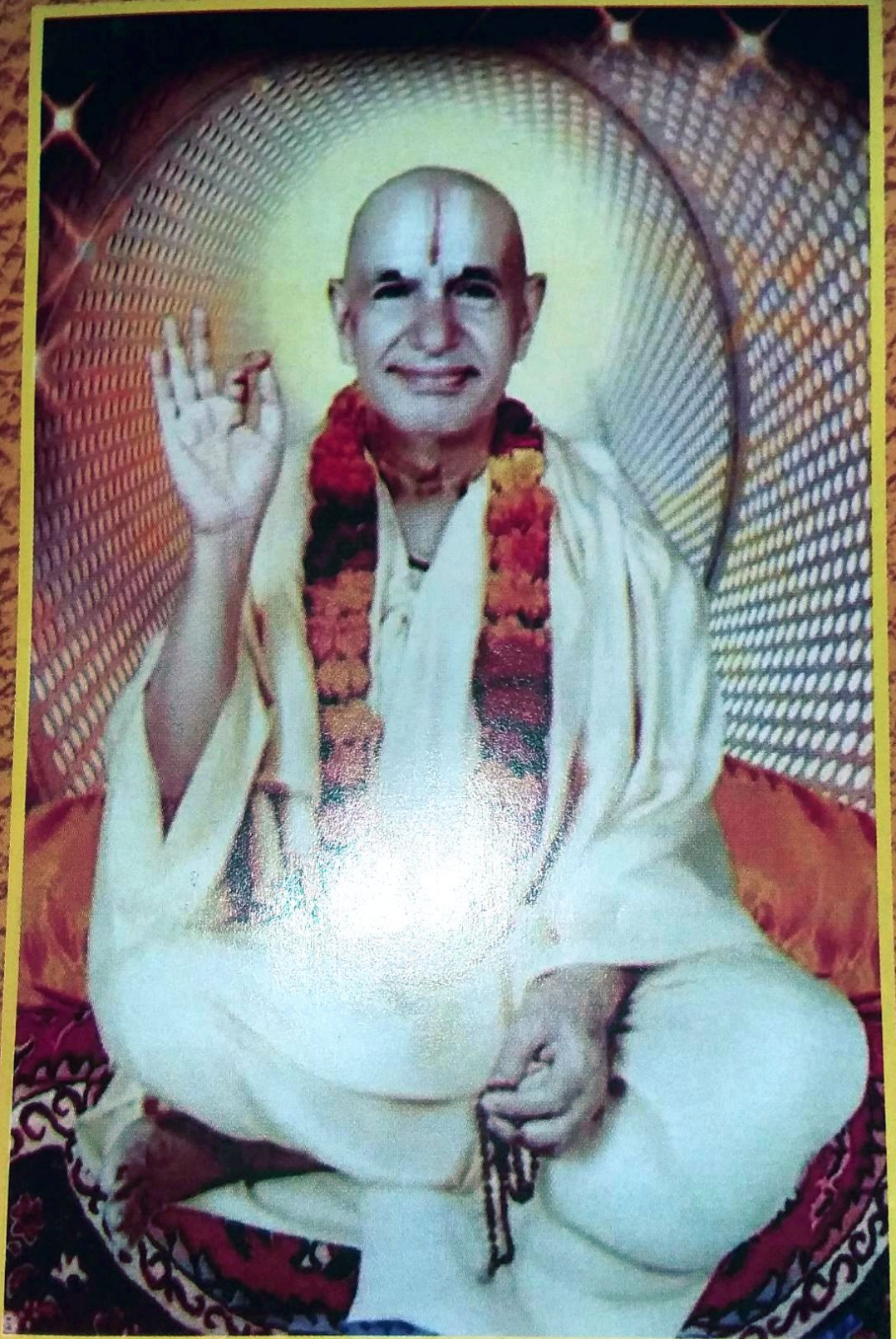
अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री रामहर्षण दास जी महाराज

श्री सिद्धि सदन विहारी विहारिणी जू

श्री सिद्धि सदन विहारी विहारिणी जू

आत्म निवेदन

अनन्त श्री परिलसित, भगवल्लीला रस–रसिक, प्रेमावतार, पंच रसाचार्य हमारे सद्गुरुदेवभगवान स्वामी श्री राम हर्षण दास जी महाराज के अरुणाभ युगल चरण कमलों में बार–बार दण्डवत प्रणाम कर उनका सतत मंगलानुशाषन करते हुए, उनकी कृपा प्राप्ति हेतु कर बद्ध याचना है। यद्यपि उनकी कृपा भगवती जीवों पर सतत बरसती रहती है जिसके अभाव में कोई जीवित ही नही रह सकता तथापि दास इसके अतिरिक्त कुछ और कर भी क्या सकता है।

सरकार श्री की कृपा भगवती का प्रसाद है "झूलन बहार", जिसमें निश्चित रूप से शब्दों मे रूप में सरकार श्री विराज कर सुशोभित हो रहे हैं। दास की तो मात्र त्रुटियाँ ही हैं।

प्रस्तुत झूलन बहार में सरकार श्री के कृपा प्रसाद सुमनों के अतिरिक्त अन्य सन्य संतो व भागवतों के कृपा प्रसाद भी संकलित है। जो निश्चित रूप से भक्तजनों को प्रियकर प्रतीत होंगे।

अन्त में दास सभी भागवत वृन्दों के श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम कर यही चाहता है कि हमारे सरकार श्री का मुख कमल सदा विकास को प्राप्त होता रहे।

कृपा कांक्षी
राम नरेन्द्र दास

विषय सूची

मांक	पद	पृष्ठ संख्या
१	मंगलमयी आरती नीकी।	१
२	श्रीधर सुता समोद भवन निज,	१
३	झूलत सिद्धि सदन रघुनन्दन,	४
४	झूलत नृपति कुमार कुमरिया, कमला तीरे शोभनमा रे।	५
५	झूलत श्री निधि सिद्धि कुँअरि सँग,	६
६	निरख लो आज जी भर के,	७
७	शालिग्राम भगवान झुलना झूलि	८
८	नवल निकुंज बीच, नवल कदम्ब डार,	९
९	झूलैं नवल लली लाल	११
१०	झूलो हो झूलो हो मोरे प्राणों के प्यारे लालन,	१२
११	झूलत सिद्धि सदन के प्राण।	१३
१२	हिंडोरे झूलत आत्माधार।	१३
१३	झूलैं दोउ इक इक प्राणाधार।	१४
१४	झुलनवा हो झूलैं पिय प्यारी।	१४
१५	झूलैं झूलैं सिया रघुवीर, झुलनवा रसहिं झरे।	१५
१६	झूलैं झूलना आज, अवधपुर वारो री।	१६
१७	नवल झूलन में मन मोहन,	१७
१८	झूलि रहे राघव हरषाये।	१८
१९	झुलत झूलना रघुकुल वारो।	१८
२०	झूलि रहीं सिय अति हरषायीं।	१९
२१	झूलत नवल नागरी नागर,	२०
२२	गुरुवर झूलि रहे सुख छाये।	२१
२३	झूलत दोऊ धीरे धीरे।	२२
२४	झूलत श्यामा श्याम, आज शुचि कमला तीरे।	२३
२५	झूलि रहेव सिय साजनमा,	२४
२६	आज झूला पर्‍यो मन भावना।	२५
२७	झूलत दोऊ राज दुलारे।	२६
२८	झूलैं हिंडोलना, मिथिराज नन्दिनी।	२७
२९	झूलैं सिया रघुरैया, मधुर मधुर आज,	२८
३०	झूलैं मिथिला नगरिया मा आज दुलहा,	२९
३१	झूलत दोउ मन मोद अली।	३०
३२	आओ आओ मोरे प्राण प्यारे,	३१
३३	सखि देखो झूलन कुंज बीच	३२
३४	ये झूलन कूल कमला के, सिद्धि सखियाँ सजाई है।	३३
३५	झूलि रहे सिद्धि सदन, प्यारी औ पियार री।	३४
३६	झूलत हिंडोला आज, अवध नृपति नन्दन री।	३५
३७	चलो चलो देखि आवैं सजनी, सिद्धि सदन को झूला।	३५

क्रमांक

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १ २ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

क्रमांक	पद	पृष्ठ संख्या
१	मिथिला के भाग	३६
२	कल कल कल नाद कर	३६
३	हो मोरे प्राण झूलैं मिथिला	३७
४	आई श्रावण की बहार	३७
५	झूलि रहगे मन के हरणवा	३८
६	दोउ झूलैं कदम की डार	३९
७	हरि हरि झूलै कदम की डार	३९
८	सजनी विलोकि आज	४०
९	सिद्धि सदन सखी आज	४१
१	झूल रहे मिथिला महलिया	४२
२	झूलन के झोंके जरा	४२
१	झूलै नवल हिंडोल में	४३
२	झूल रहे आसत्म अधारी	४४
३	झूलत सिद्धि सदनवाँ	४५
४	झूलन पे आज शोभते	४६
५	नवल दोउ झूलत	४७
६	सिद्धि सदन सुख सनवाँ	४८
७	झूलै झूलैं सिधि मन मानस विहारी	४९
८	झूलत आज हो	५०

———:::::———

आरती

मंगलमयी आरती नीकी।

झूलन कुंज प्रिया अरु प्रीतम, झूलत प्रेमहिं प्रेम पगी की।

भहर भहर भल भ्राजत भूषण, लाजत अगणित सूर्य शशी की।

श्याम सुगौर सहज सुन्दरता, शत सत कोटि काम रति फीकी।

परम पुनीत पीत पट पहिरे, निरखनि मुसुकनि झरनि अमी की।

श्रावण सुभग सेव सिय श्यामहिं, सम्पति साजि सुखहिं सरसी की।

केकी कीर चहकि पिक बोलनि, पी पी रट लगि भली पपी की।

नवल नृत्य वर वाद्य गान गुण, छायी चहुँ दिशि सुखद ध्वनी की।

उमगि झुलावति अलवेली अलि, बदरा वरषि लगाय झरी की।

दास नरेन्द्र बिबुध बहु वरषहिं, सुखहिं सने शुभ सुमन कली की।

श्रीधर सुता समोद भवन निज,

अनुपम झूलन को सजवाई।

उत्सव साज समाज बुलाइ के,

सीयराम झूलन पधराई।

करि आरती सुगन्ध अरपि पुनि,

सुखद दियो ताम्बूल पवाई।

रेशम डोरी पकरि करन में,

झुलवन लगीं सिया रघुराई।

पगी की।
शशी की।
रति फीकी।
ने अमी की।
सरसी की।
ी पपी की।
ध्वनी की।
झरी की।
कली की।

श्री रघुवीर सिया सँग में,
नव झूलन झूलि रहे सुख छाई।
मुसुकि मुसुकि आनन्द पगे,
दोउ नेह समुद्र में गये नहाई।
डरपत दोउ कुअँरि कुमार अधिक,
लीन्हे निज हिय से हियहिं लगाई।
लखति सिद्ध अनुराग भरी,
रघुराज के रँग रँग गयी महाई।

मधुरे मधुरे दोउ झूलि रहे,
मुसुकावत हैं दोउ नयन चलाई।
कबहूँ अनिमेष निहारत हैं,
कबहूँ गल बाँह देंय हरषाई।
नव नृत्यति नवल नवेली कोउ,
शुभ वाद्यन धुनि चहुँ ओर सुनाई।
कोउ गान करै अलवेली अली,
प्रीतम प्यारी हित सेव सुहाई।

सुर सकल तीय सह लाभ लेत,

लोचन को फल गुनि कर सेवकाई।

वरषत नभ ते बहु विधि प्रसून,

शुचि स्रग सुगन्ध छन छन अधिकाई।

प्रवहत शीतल सुरभित समीर,

अति मन्द महा आनन्द प्रदाई।

दास नरेन्द्र लखत झूलन,

तृण तोरि तोरि पुनि पुनि बलि जाई।

सियाराम विराजे झूलन में,

अतिशय मन मोदित हिय हरषायी।

अरुझे गल बाँह दिये दोऊ,

मुसकान के जालन रहें फँसायी।।

निरखत इक एकन ओर सदा,

आनन्द पगे अनवरत सदाई।

बसि जाँय नरेन्द्र उरांगन में,

रहें छाये दोऊ लोचन छवि छायी।।

झूलत सिद्धि सदन रघुनन्दन, संग सिया सुकुमारी। अहो रे।
वसन विभूषण अँग अँग सोहत, निकसत छटा अपारी। अहो रे।
मन्द मन्द मसुकत मनहारी,
चितय चतुर्दिक जादू डारी।
तिरछे तकनि सम्हारी। अहो रे.....।
झकि झुकि झमकि झूलना झूलत,
डरपत कबहुँ,कबहुँ सुख फूलत।
झुलवति सिद्धि कुमारी। अहो रे.....।
विविध वाद्य वर बहु विधि बाजत।
रसमय गायन सामहुँ लाजत।
जय धुनि होत सुखारी। अहो रे.....।
नृत्यति नवल नवेली नेहहिं,
रिझवति रसिकिनि रसिक सुसेवहिं।
ललचति नभ सुरनारी। अहो रे.....।
सुरन समूह सुमन बहु वरषत।
मुद भरि दास नरेन्द्र निहारत।
सहपति रति मदगारी। अहो रे.....।

२

झूलत नृपति कुमार कुमरिया, कमला तीरे शोभनमा रे।
दिये परस्पर भुज भुज फन्दनि, मोहत मनहिं मोहनमा रे।।
सुखप्रद तरु कदम्ब की डारी।
मणियन खचित हिंडोर सुखारी।
मुसुकत झूलत दोउ मन हारी।
धीरे धीरे वहत पवनमा रे।। कमला तीरे....।।
भू महँ नव हरीतिमा छाई।
दादुर पपिहा शोर सुनाई।
कोयल कुकनि अति सुख दाई।
परति बूँद छन छनमा रे।। कमला तीरे....।।
डाले गलबहियाँ दोउ झूलैं।
लखत परस्पर आनँद फूलैं।
मृदु मुसकाय भान सब भूलैं।
टरत न पलक नयनमा रे।। कमला तीरे....।।
मन्द मन्द कोउ सखी झुलावति।
कोउ नृत्यति कोउ तान सुनावति।
मधुर मधुर कोउ वाद्य बजावति।
सुर वर वर्षे सुमनमा रे ।। कमला तीरे....।।
जयजय शोर अतिहिं सरसायो।
परमानन्द चतुर्दिक छायो।
दास नरेन्द्र लखत ललचायो।
भाग्यो भव को भनमा रे।। कमला तीरे....।।

झूलत श्री निधि सिद्धि कुँअरि सँग,

झुलवहिं राघव अति सुखपाये।

विरचित मणियन सुन्दर झूलन।

पुष्पास्तरण बिछे मन भूलन।

आग्रह करि रघुवीर चढ़ाये।।

सकुचे सहमे लज्जित मन से।

झूलत दोऊ अति अनमन से।

तत् सुख सुखी भाव हिय लाये।।

दुहुन परशि प्रभु स्वस्थ करावत।

मन्द मन्द पुनि लगे झुलावत।

निरखि युगल रघुवर हरषाये।।

उतरि सिद्धि रामहिं पधरायी।

झुलवति अतिशय आनन्द छायी।

प्रेम वारि हिय नयनन आये।

देखि देव बहु होत सुखारी।

नभ अरु भूमि अनन्द अपारी।

सुमन झरत सुरभित लवलाये।

जय श्री निधि जय रघुवर रामा।

जय श्री सिद्धि जयति वर धामा।

कह नरेन्द्र दुन्दुभी बजाये।।

निरख लो आज जी भर के,
युगल सुषमा के सारों को।
हिंडोले झूलते दोनो,
रसिकवर प्राण प्यारों को।।
मधुर मुसका रहे छवि वर,
सिद्धि गृह झूलते झूला।
लिपटते एक एकन सों,
ताकते नयन कोरों को।।
सुखद अँग अंग में साजे,
अनूपम वसन अरु भूषण।
नवल अंगों के सौष्ठव से,
लजाते रती मारों को।।
मधुर बातें परस्पर की,
मधुर मुसुकनि मधुर चितवनि।
बसा लो निज उरालय में,
सदा को दृग सितारों को।।
जिये युग युग प्रिया प्रीतम,
हमारी चाह यह केवल।
कभी दृग तृप्ति पायें ना,
निरखि शोभा अगारों को।।
सुमंगल हो सदा मंगल,
युगलवर का सदा मंगल।
निछावर नरेन्द्र का सर्वस,
प्रिया प्रियतम दुलारों को।।

शालिग्राम भगवान झुलना झूलि रहे।
विष्णु प्रिया सँग अति मन मोदित,
मधुर मधुर सुखमूल रहे।
नगन जड़ित टोपी शिर सोहत,
फहरत पीत दुकूल रहे।
श्याम हरित झाँकी लखि लखि जन,
लेत बलैयाँ सूल अहे।
राम श्याल सरहज शुचि सदनहिं,
आनँद बोरि अतूल रहे।
जय जय कहत सुमन बहु बर्षत,
प्रेम पगे मन भूल रहे।
बाद्य बजत बहु विधि अति मधुमय,
नृत्य गान अनुकूल रहे।
दास नरेन्द्र निहारि छके छवि,
अपनो आपा भूल रहे।

नवल निकुंज बीच, नवल कदम्ब डार,
नवल हिंडोरा रच्यो, नवल वितान है।
नवल लली लाल नवल नवल श्रृंगार किये,
झूलि रहे नवल नवल मन्द मुस्कान है।।
नवल नवल सिद्धि, नवल सहेलिन सँग,
नवल साज साजि नवल अंग पुलकान है।
नवल नेह में नहाय, नवल युगल को झुलाय,
नवल लली लाल की करे सेवा महान है।।

२

भूषण की चमक नवल, वसनन की दमक नवल
नवल हिये हार नवल माणिक मुकतान है।
चितवनि की चोट नवल, लता वन ओट नवल
झूलन की झमक नवल, खींच रही प्राण है।।
नवल नवल मेघ वरषैं, नवल सुवुन्द वारि,
नवल नवल केकी कीर कोयल कुहुकान है।
नवल नवल पपिहा रटत, नवल नवल पीउ पीउ,
नवल नवल दादुर को शोर हूँ सुहान है।।

३

नवल नवल वाद्य वजत, नवल अली नृत्य नचत,

नवल गीत गायक अरु, नवल नवल तान है।

नवल नवल जय को स्वर, गूँजि गयों अवनि अम्बर,

नवल विवुध वरषै, नवल नवल कुशमान है।।

नवल नवल झूलन में राजे युगल नवल छवि ,

देखि देखि हिये होत नवल कहरान है।

कहि न जाँय आवे हिय भाव जो नवल नवल,

मन सुबुद्धि वाणी के पार छहरान है।।

४

नवल पवन शीतलता विखेर रहे चारो ओर,

नवल सुगन्ध सनी मन्द फहरान हैं।

नवल नवल देव सबै बरषैं नवल पुष्प,

नवल दुन्दुभी की चोट घहरान है।

नवल नवल देवतिया नाचि रहीं गगन माँहि,

नवल नवल नूपुर की छायी छहरान है।

नवल नवल भाव भरे निरखैं नरेन्द्र दास,

नवल नवल सेवा कर हिये पुलकान है।।

६

झूलैं नवल लली लाल।
नवल निकुंज बिच नवल हिंडोलना,
नवल कदम्ब की डार।।
नवल वसन साजे नवल विभूषण,
नवल मणिन वर जाल।।
नवल नवल केलि नवल हँसनि मन्द,
नवल दृगन की चाल।।
नवल पावस नव नवल नवल मेघ,
वरषे नवल जल धार।।
नवल नचत केकी, नवल कोयल कूकी,
नवल पपिहा गुंजार।।
नवल सखी झुलाय, गीत नवल गाय,
नवल वाद्य झनकार।।
नवल नवल नृत्यति नव नवला,
नवल राग नव ताल।।
निरखि निरखि नव नवल सुखहिं सनि,
झूलन की नव चाल।।
अति प्रसन्न नव नव मुसुकन लगे,
नवल युगल लली लाल।।
नवल निसान नभ नाचि के बजावैं देव,
नव फूल वरषैं सुरबाल।।
नवल झूलन छवि देखि के नरेन्द्र दास,
बार बार होत नव निहाल।

झूलो हो झूलो हो मोरे प्राणों के प्यारे लालन,
कमला के तिरिया पे, झमकि झुलनवा।।
गोरी गोरी जनक किशोरी सिया सँग,
मन मुद पागे पागे, मन के हरनवा।।
अमवा कि डरिया पे पड़ो है हिंडोलना,
जड़े जामे जगमग, हीरा मणिनवा।।
पावस सजाये साज निज सम्पति सों,
धरा सोहे धानी धानी, ओढ़े चुनरिया।।
केकी कीर कोयल कूके नाचे मन छमछम,
पीउ पीउ की रट लागे, पपिहा सुहनवा।।
वहत सुगन्धित त्रिविध बयारी,
वर्षे बदरा कारे कारे, सघन बूँदनवा।।
बड़ो ही सुभाग से समय सुआयो,
अमर अम्बर से, वर्षे सुमनवा।
लखि लखि झूलन झाँकी युगल नवल की,
हिय में बसाय लेवैं, करि के जतनवा।।
सुनि सुख सानि वर विनय नरेन्द्र दास,
सिया सँग झूलन लागे, सिया के सजनवा।।

झूलत सिद्धि सदन के प्राण।
सिया सहित सुकुमार सावँरो, नेह विवश अरुझान।
झूलन कुंज रत्न मयि भूमी, रत्न हिंडोरा जान।
मुसुकि युगल मनहर मनमोहन, केलि करत मनमान।
कहुँ गलबाहहिं दै दै झूलहिं, कबहुँ हृदय लपटान।
कहुँ इक एक निहारि अनपलक, कबहुँ परश प्रिय पान।
लेवहिं सिधि सह सहचरि यह सुख, सेइ प्राण के प्राण।
दास नरेन्द्र कृपा को जोहत, सोइ छवि सिन्धु भुलान।

९

हिंडोरे झूलत आत्माधार।
सिया सुनयनानन्द वर्धिनी, अरु कौशला कुमार।
प्रकृति नटी नर्तति प्रभु आगे, सम्पति सिगरी धार।
मेघ मलार गाइ जनु वर्षत, वारि मूसला धार।
पवन त्रिविध ह्वै प्रवह प्रमोदित, आनँद वर्धन वार।
नचत मोर बोलति कोयलिया, पपिहा कर गुंजार।
अलि समाज गावहिं भावन भरि, बजहिं वाद्य सुखकार।
देवतिया अप्सरा गगन महँ, भूमि नचत नव नार।
हरषि बजावत देव दुन्दुभी, वर्षत सुमन अपार।
राम नरेन्द्र दास झूलन की, झाँकी पर बलिहार।

झूलैं दोउ इक इक प्राणाधार।
श्री मिथिलेश लड़ैती सिय सँग, श्री अवधेश कुमार।
सिद्धि सदन रतननमय सुन्दर, झूलन कुंज सुखार।
मघुर मधुर करि करि कल केली, इक इक पर बलिहार।
श्रीमति सिद्धि कुँअरि सँग सखियाँ, सेवहिं सब सुख वार।
कोउ गावहिं नृत्यहिं भरि भावहिं, कोउ झुलवहिं हिय हार।
वीणा वेणु सितार सरंगी, बाजहिं मृदु झनकार।
हिय के हरण युगल कहँ लखि लखि, बाढ़्यो अनन्द अपार।
जय कहि विवुध प्रसून प्रवर्षहिं, झाँकी युगल निहार।
दास नरेन्द्र युगल झूलन छवि, सुधि बुधि देति बिसार।

११

झुलनवा हो झूलैं पिय प्यारी।
सिद्धि सदन सुखमय रस भरि दोउ, नव झूलन रुचिकारी।
भहर भहर पहिरे पट भूषण, निकसत ज्येति अपारी।
सखियाँ सजीं साज सजि सुखमय, सहित सिद्धि सुखसारी।
निरखि निरखि रुचि रहीं झुलावति, पगी प्रेम रिझवारी।
अरश परश बतरात मधुर मधु, मधुमय मधुहि प्रसारी।
दै दै गलबाहहिं दोउ झूलत, छन छन परत फुहारीर।
बजत वाद्य अलि नृत्यहिं गावहिं, भावन भरी सम्हारी।
केकी कीर कोकिला कुहुकति, पपिहा रटत पियारी।
आनँद आनँद अकथ अनूपम, छायो महल मझारी।
भयो विभोर नरेन्द्र निरखि छवि, जड़ चेतन जग सारी।

झूलैं झूलैं सिया रघुवीर, झुलनवा रसहिं झरे।
कंचन विपिन कदम्ब की डारी,
शुचि सरि कमला तीर, हिंडोलना हियहिं हरे।
सहजहिं सुन्दर सहज सलोने,
युगल नवल दिलगीर, मोहनवा मनहिं हरे।
श्रावण साज सजाय प्रकृति भल,
सेवति हिय धरि धीर, सोहनवाँ सुखहि सरे।
वसन विभूषण झलमल लहरत,
करत करेजे पीर, जिगरवा जगहिं हरे।
सिद्धि सखिन सह गाइ झुलावति,
प्रेम पगी हिय हीर, नयनवाँ नाहि टरे।
नृत्य गान वाद्यन धुनि छायी,
बोलत कोकिल कीर, पपिहवा पियहिं ररे।
दास नरेन्द्र जयति जय उचरत,
देवहुँ होत अधीर, सुमनवाँ झरहिं झरे।

झूलैं झूलना आज, अवधपुर वारो री।

सरयू तीरे विपिन प्रमोदे, वर्धत सुखहुँ समाज,
सिया सँग प्यारो री।

झमकि झकोरे श्यामल गोरे, सुखमय दोऊ राज,
सुरस उपजायो री।

बरषे पनिया नन्ही नन्ही बुँदिया, मेघ अलापत राग,
मनहु हरषायों री।

अलिन झुलावैं वाद्य बजावैं, पियहिं रिझावन काज,
नटहिं चित चायों री।

कोयल कुहुकति, मधुर मधुर अति, पपिहा रव अति गाज,
दादुर धुनि छायो री।

दिये गलबाँही झूलत जाहीं, मुसुकि मुसुकि रसराज,
जनहिं अरुझायो री।

सुर बहु रंगा बर्षे अभंगा, सुरभित सुमन अपार,
जयति जय गायो री।

दोउ प्रिया प्रियतम बैठे झूलन, हिय नरेन्द्र के राज,
आश भलि भायो री।

नवल झूलन में मन मोहन, सिद्धि सर्वस विराजे हैं।
कुँअर श्री निधि के नयनोत्सव, सिया हिय हार भ्राजे हैं।।
प्रीति की डोर में बँध कर, सुख सने झूलते झूला।
कृपा की दृष्टि दे देकर, वितरते सुख समाजे हैं।।
पिया रुचि प्रिया अनुहर कर, प्रिया रुचि पिया रखते हैं।
परस्पर के सुखों को ही, समझ निज सुखहिंसाजे हैं।।
पिया मुख चन्द्र को प्यारी, प्रिया मुख कमल को प्यारे।
निरखि नहिं तृप्ति पाते हैं, पलक बिनु नयन राजे हैं।।
प्रेम परिपूर्ण युग छवि को, पेखि सब लोग छकते हैं।
सुमंगल हो सदा मंगल, भावना भरि सुछाजे हैं।।
झुलातीं सिद्धि सुख सानी, ननँद ननदोई मुख लखकर।
सुखी होवैं क्रिया सोई, सेव करतीं सुसाजे हैं।।
महल में मधुर वाद्यन धुनि, सरस सुखमय सुहाई है।
नृत्य अरु गान भावन भरि, ब्रह्म सुख सुनि सुलाजे हैं।।
अली कोई कोकिला बनकर, कुहुकती स्वर सुपंचम में।
कोई बन मोर नाचे है, जगत की छोड़ लाजे हैं।।
महानँद सिन्धु उमड़ायो, अस्त चैतन्य जड़ सिगरे।
सुमन बरषैं देव नभ ते, जयति जय नरेन्द्र गाजे हैं।।

१५

झूलि रहे राघव हरषाये।
कमला तीरे, सुभग झूलना, संग सिया मन भाये।
सुखद छाँह वर तरु तमाल की, मुनियन मन ललचाये।
तेहिं की अति सुन्दर डाली पर, अलिन हिंडोर सजाये।
कनक मणिन को बन्यो हिंडोला, सुखप्रद अतिहिं सुहायो।
राजत सीय राम मुसुकत तेहिं, दामिनि घनहिं लजाये।
श्री निधि कोमल स्वरन मधुर मधु, मुरली तान सुनाये।
सिद्धि अलिन सह गाइ झुलावैं, त्रिभुवन जय धुनि छाये।
सुरहुँ प्रसून अनवरत वरषत, वाद्यहुँ विविध बजाये।
राम नरेन्द्र दास हिय यह छवि, आवत कहर मचाये।

१६

झुलत झूलना रघुकुल वारो।
संग सिया सुकुमारि पियारी, रसिकन हिय को हारो।
सरयू तीर कदम्ब की डरिया, पड़ो झूलना प्यारो।
दादुर मोर पपीहा कोयल, गूँजत रव सुख सारो।
कोउ अलि नृत्यहिं वाद्य बजावहिं, ताता थेइ झनकारो।
कोउ झुलावति मधुरे मधुरे, पवन वहत मतवारो।
कबहुँ उतरि रसिया रघुनन्दन, सियहिं झुलाव सुखारो।
बसै नरेन्द्र दास झूलन छवि, तलफत हिया हमारो।

झूलि रहीं सिय अति हरषायीं।
प्राणाधिक प्रिय भाभी सँग में, सिद्धि सदन सुख छायी।।

मणिमय रेशम डोर सुहायी,
तेहिं पर शुचि आशन बँधवायी,
अलिन विनिर्मित सुखद झूलनो, झूलहिं भाभी ननँद अमाई।।

सखियाँ देवति जबहिं झकोरा,
सिमटि जाति सिय भाभी कोरा,
एक रूप दोउ लागति जैसे, सिय प्रतिबिम्ब बिम्ब भौजाई।।

अलियाँ वाद्य बजावति मधुरे,
राग अलापति मेघ सु सुर रें,
सुरतिय धारि वेष वर अलियाँ,नृत्य करतिं मन में उमगाई।।

जय जय शोर होत बड़ भारी,
जनक लली जय सिद्धि कुमारी,
भयो नरेन्द्र दास जो आनँद, जानै सो जेहिं देइँ जनाई।।

झूलत नवल नागरी नागर,
मुसुकि मुसुकि मन भाये हो।
वसन विभूषण सजे सुसुखमय,
अनुपम छवि छहराय हो।
निरखि रहे इकटक इक एकन,
नयन न पलक गिराये हो।
सुरभित पवन वहत अति मन्दहुँ,
आनँद अतिहिं बढ़ाये हो।
मन्द झुलावति सिद्धि हिंडोरा,
परमानन्दहिं पाये हो।
प्रेम पगी अलियाँ सब सेवहिं,
वाद्य नृत्य अरु गाये हो।
करि करि सिधि स्पर्श रामहूँ,
प्रमुदित ह्वै सुख छाये हो।
सिद्धिहुँ पाइ युगल स्पर्शन,
तन मन सुधिहुँ भुलाये हो।
नभ ते देव सुमन बहु वरषहिं,
जय जय शोर सुहाये हो।
राम नरेन्द्र दास दोउ निरखत,
लोचन नाहिं अघायो हो।

१९

गुरुवर झूलि रहे सुख छाये।

परमानन्द विवर्धन हेतुहिं, जन रुचि राखि स्वरुचिहिं छिपाये।

रेशम डोर सुहावन पावन,

गूँथि सुगन्धित पुष्प मोगरन,

सिद्धि सदन में सुन्दर झूलन, मुसुकि चढ़े गुरुवर हरषाये।

श्वेत पुनीत वसन तन शोहत,

गौर वर्ण द्युति सब मन मोहत,

निरखि चतुर्दिक छटा विखेरत, स्वजनहिं आनन्द सिन्धु डुबाये।

जो बड़ भागी सोइ झुलावत,

नृत्यत कोउ मृदंग बजावत,

मधुरे मधुरे कोउ अलापत, जय धुनि सब उचरत उमगाये।

सात्विक भाव सबहिं हिय छाये,

प्रेमामृत रस जनहिं पिलायो,

दास नरेन्द्र हिये जो आनन्द, तेहि नाही कोऊ कहि पाये।

झूलत दोऊ धीरे धीरे।
कंचन पिपिन कदम्ब डार पर, शुचि सरि कमला तीरे।
सुरभित पवन वहत सुखदायी,
कल कल वारि सुशोर सुहायी,
श्याम गौर सुख सीरे।
घन दामिनि सी छहरति आभा,
अलियन देति देवत नयन सुलाभा,
सेवति प्रकृति सुखी रे।
चन्द्रकला सखि मधुर झुलावै,
हेमा राग अलापि रिझावै,
छेमा नचत पगी रे।
वीन लक्ष्मणा मधुर बजाई,
सुभगा कर मंजीर सुहाई,
सुषमा लखत छकी रे।
शीला चारु मृदंग बजावैं,
वीणा वरारोह झनकावैं,
पद्म गंध चुटकी रे।
आनँद आनँद आनँद भायो,
सुरन्ह प्रशंसि सुमन वरषायो,
जय नरेन्द्र उचरी रे।

झूलत श्यामा श्याम, आज शुचि कमला तीरे।
सिय रघुनन्दन राम, द्रुमन बिच धीरे धीरे।
कमला तीरे आम्र की डरिया,
रच्यो हिंडोरा प्रमुदित तहिंया,
प्रकृति प्रभा अभिराम, सबहिं मन कर्षति सी रे।
नभ ते मेघ श्याम जल वरषत,
आनँद महँ अति आनँद वर्धत,
धरा भई पूर्ण काम, सरित जल पूर्ण बही रे।
नव श्रृंगार किये पिय प्यारी,
अँग अँग भूषण वसन सम्हारी,
श्याम गौर छवि धाम, लखत इक इक ओरी रे।
अरुझे दिये दोउ भुज फंदनि,
मुसुकि मोहते सकल सहेलिनि,
वाद्यहुँ बजत ललाम, नचति कोउ नवल अली रे।
तन सों दिव्य सुगन्ध विखेरत,
झुकि झुकि झमकि परस्पर पेखत,
बसैं हिये अठ याम, नरेन्द्र दास विनती रे।

झूलि रहेव सिय साजनमा,

आज मन्त्रार्थ मण्डपम् झुलनमा ।।

सद्गुरु श्री राम हर्षण देवा ।।

करी कृपा लखि शिष्यन केवा ।।

आश्रय दियो सोहनमा ।। आज...

झूलत तहाँ बहन बहनोई ।।

प्रेम पगे अत्यानँद मोई ।।

छवि छहरति छन छनमा ।। आज.....

चितय परस्पर दै गलबाँही ।।

झूलत आनँद हिय न अमाहीं ।।

हेरत हिया हेरनमा ।। आज.....

सदगुरु हृदय के विलसन वारे ।

वैभव सकल स्वकीय सम्हारे ।।

करुणा कृपा भवनमा।। आज.....

गान तान लय अति सुखकारी ।।

आनँद वर्द्धन अमित अपारी ।।

मगन होत सब मनमा ।। आज.....

निरखत देव चढ़े गगनोपरि ।।

झूलन झाँकी रस की आगरि ।।

छन छन वरष सुमनमा ।। आज.....

भाग्य समुझि निरखहिं नर नारी ।।

राम नरेन्द्र दास हिय हारी

भूलत भव को भनमा ।। आज.....

आज झूला पर्‌यो मन भावना।

श्री मन्त्रार्थ मण्डपम् मध्यहिं, मणियन खचित सुहावना।।

झूलि रहे सिय साजन सिय सँग, सुन्दर सुख सरसावना।।

निरखि परस्पर छवि दोउ अपलक, मधुरे मुख मुसकावना।।

दै गल बाँह हियहिं छपकाये, अति आनन्द समावना।

तत्सुख सुखी सहचरी सखियाँ, झुलवहिं भरि अनुरागना।

राग अलापि मल्हार तान लै, मधु स्वर वाद्य बजावना।

जय जय उचरत देव देवतिय,. झरत पुष्प भरि भावना।

आनँद आनँद चहुँ दिशि छायो, लखहिं लोग ललचावना।

दास नरेन्द्र निरखि यह झाँकी, बार बार बलि जावना।

झूलत दोऊ राज दुलारे।
रघुकुल सूर्य राम रघुनन्दन, लक्ष्मीनिधि निमिकुल उजियारे।।
कमला प्रवहति वारि प्रपूरित, कलकल शब्द उचारे।
मनहु देखि झूलत कुमार दोउ, बलि ह्वै जयति उचारे।।
मेघ मलार गाइ कर सेवत, कोयल कुहुक सुखारे।
दादुर शोर सुनाय चतुर्दिक, पपिहा पीउ रटारे।।
नमि नमि जाति कदम की डारी, रिमझिम परत फुहारे।
श्रीनिधि भ्रात झुलाय रहे दोउ, त्रिभुवन के दृग तारे।।
मधुर मधुर मधु वाद्य बजावत, ढोल मृदंग नगारे।
वीण सितार मजीर पखावज, तबला बोल अपारे।।
देव देवतिय ह्वै प्रसन्न अति, वरष सुमन सुख गारे।
दास नरेन्द्र निरखि यह झाँकी, बार बार बलि हारे।।

झूलैं हिंडोलना, मिथिराज नन्दिनी।
रघुराज संग में, निमि राज नन्दिनी।
कमला सुतट मनोरम, झूला रच्यो अनूपम,
श्रावण की साज सुखमय, सुन्दर अमन्दिनी।
रघुराज मुख निहारैं, तन मन सुरति बिसारैं,
पिय गोद में विलसतीं, शत शशि विनिन्दिनी।
सखियाँ अलाप ले ले, गातीं व नृत्य करतीं,
वर वाद्य धुनि मधुरिमा, जन मन अनन्दिनी।
अम्बर से अमर तिय सँग, झूलन की छवि निहारैं,
छन छन प्रसून झारैं, जय जगत वन्दिनी।
आनन्द रस की धारा, डूब्यो त्रिलोक सारा,
रस दान कर रहीं हैं, पिय मुख सुचन्दिनी।
झाँकी अनुप सुहावनि, जन जन हिय कहर मचावनि,
बलि बलि नरेन्द्र जावैं, भव भीति भंजिनी।

झूलैं सिया रघुरैया, मधुर मधुर आज, मिथिला धाम में।
कंचन वन में कमला कूले, कल कल नाद सुखरिया,
झूलन कुंज कदम्ब डार पे, झूला पड़ो सुघरिया।
सखियाँ साज सब सजैया, मधुर...।।
रिमझिम रिमझिम मेहा वरषे, पवन चले वहे पुरवइया,
कोयल कुहके बिजुरी चमके, पपिहा पीउ रटइया।
नाचे मोर औ मोरिनिया, मधुर....।।
चम्पक वर्णी चारु अंगि सिय, विद्युत ज्योति लजइया,
श्याम शरीर सुभाय सुहावन, रविकुल रवि रघुरैया।
डाले दोउ गल बहियाँ, मधुर ....।।
तबला बाजे सरंगी बाजे, और बजे हरमुनिया,
डफ सितार शहनाई बाजे, बाजे विविध बजनिया।
छायी सुखद धुनि सुहैया, मधुर...।
सुर सब गगन विमानन आये, झूलन लखैं अपरिया।
वरषहिं सुमन बजाइ दुन्दुभी, जय जयकार उचरिया,
सबके हिय हरषैया मधुर....।।
कोऊ झुलावै कोऊ गावै, तान लेत कोउ भैया,
नाचैं सब मिलि प्रेम परस्पर, भव को भान भुलइया।
दास नरेन्द्र गुण गइया, मधुर....।।

झूलैं मिथिला नगरिया मा आज दुलहा,
संग सिया सुकुमरिया के भ्राज दुलहा।
सुखद अँगनिया है सिद्धि अगरिया।
रच्यो तहाँ है झूलन मनहरिया।
जामे जड़े हीरा पन्ना मरकत मणिया।
सुख साने मनमाने, राजैं दुलहि दुलहा।।
पहिरे पुनीत पीत भूषण औ वसना।
कोटि कोटि रवि शशि द्युतिहिं लजवना।
शिर मणि मौरी मौरा सेहरा लुभवना।
टारे नयन नहीं टारे, इकटक निहार दुलहा।।
विद्युत की ज्योति लाजे सिया सुकुमरिया।
शत शत शारद शशि जावै बलिहरिया।
निम्न नयन निरखनि श्याम चित चोरिया।
सुधि भुलाय करत तन मन निहाल दुलहा।
चारे ओर सोहे सब सिया सहचरिया।
नाचैं गावैं भाव दिखावैं वाद्य झनकरिया।
सेवा साज लीन्हे ठाढ़ी निरखि नजरिया।
आप्त काम करैं सब कहँ निहार दुलहा।
झुलवति सिद्धि ननद ननदोई।
भाग समुझि भल मन मुद मोई।
निज सुख त्यागि इष्ट सुख जोई।
बनि चकोर छवि निहारैं राम चन्द्र दुलहा।

छम छम
चम चम
कोयल कूवे
लि
सब
जय
झूलत दो
रघुकुल क
कंचन वि
कमला उ
केकी शुक
गरजत व
निज निधि
नाच गाय
करत पर
तटवर्ती
लखि लि
दास नरे

हा।

।।

।।

छम छम वरषै कारी बदरिया।
चम चम चमके दमके बिजुरिया।
कोयल कूके नाचे मोरा बन के भ्रमरिया।
पपिहा पिउ पिउ करत पुकार दुलहा।
लखि लखि दुलहा की झूलन झाँकी।
सब भये मगन सुरहुँ बुधि थाकी।
जय जय कहत जाँय सब छाकी।
नरेन्द्र दास सरवस न्योछार दुलहा।

२८

झूलत दोउ मन मोद अली।
रघुकुल कमल राम जन रंजन, तिरहुत कमल कली।।
कंचन विपिन कदम्ब की गछिया, रसमय रसहिं थली।
कमला उछरि वहति दोउ कूलहिं, कल कल करत चली।
केकी शुक पिक पपी शकुन वन, कलरव करहिं भली।
गरजत वरषत मेघ अलापत, दामिनि दमकि दली।
निज निधि निरखि झुलावहिं रस भरि, भावन भरी अली।
नाच गाय अरु वाद्य ते सेवहिं, नृपति किशोर लली।
करत परस्पर केलि युगल वर, सुख सरि प्रवह चली।
तटवर्ती भूरुह सम सखियाँ, बोरति अनँद पली।
लखि लखि देव सुमन बहु वरषहिं, जय जय करत भली।
दास नरेन्द्र युगल झूलन छवि, दुःख दोष दलमली।।

२९

आओ आओ मोरे प्राण प्यारे,
झूलो झूला मोरे नयन तारे।।
इस तन के मिथिलापुर में,
हिरदय के सिद्धि सदन में,
निर्मल थल अष्ट कमल में,
श्रृद्धा विश्वास हिंडोरे।।
चार पायों से निर्मित झूलन,
प्रीति डोरी बँधी मन भूलन,
जड़ी भाव की मणियाँ रतनन,
आत्म रूप बुद्धि दुल्हन सम्हारे।।
दस सखियाँ खड़ी रुख लेवा,
जीव सिद्धी झुलावै करै सेवा,
नाद अनहद वाद्य बजै भेवा,
कीर्ति गायन विमल वाणी गा रे।।
प्रकृति प्रकृति बनी छटा छिटकारे,
वरषे प्रेम जल की फुहारे,
प्रबल कामना हरीतिमा धारे,
नव नागर नागरि दुलारे।।
सकल इन्द्रिन में बैठे देव सारे,
देवैं निज निज कपाट उघारे,
भक्त कीर्ति मधुर डंका बजारे,
पुलक पूर्ण सुरभ सुमन वरषा रे।।
प्रेम आनन्द रस की धारा,
डूब जाये मिथिला पुर सारा,
रोम खड़े चिन्ह सात्विक विचारा,
नरेन्द्र दास जयति जय जय उचारे।।

सखि देखो झूलन कुंज बीच,
क्या शानदार छवि झूलन की।

मन मोहन मोहनि मधुश्रावी,
छटा छाय रही मन भूलन की।।

इक अजब अनोखे रंग रँगे,
दोनो पिय प्यारी झूल रहे।

बतराते हुये मधुरे मधुरे,
करते कलाप हिय हूलन की।।

श्रावण स्वकीय सुठि सम्पति से,
सुख मे सनकर सेवा सरता।

दादुर पिक पपिहा बोल रहे,
वर वायु वहत भरि फूलन की।।

बाजे विधि युत बहु बजते हैं,
भल भाव भरा गायन नर्तन।

सिय साजन स्वामिनि रिझा रहीं,
करि करि सेवा सुख मूलन की।।

अम्बर ते अमर जयति जय कह,
शुचि स्रग सुगन्ध वरषाते हैं।

आनँद आनँद आनँद छायो,
छक दास नरेन्द्र अतूलन की।।

ये झूलन कूल कमला के, सिद्धि सखियाँ सजाई है।
झूलते मुदित मन दोनो, सिया राघव रसाई है।
मैथिली मोद मन मानी, पेखती पिया की छवि को।
भाग्य वैभव पे इठलाती, प्राण रघुचन्द्र प्रियवर को।
युगल छवि को निरखि अलियाँ, सुभग झूलन झुलाई है।।
देख कर गौर वर्णी सिय, श्याम सुन्दर लजाये हैं।
सुखद संकोच पूरित हो, प्रिया के सँग सुहाये हैं।
हमारी हैं सिया प्यारी, बात हिय बीच आई है।।
कोयलिया आज कुहके है, पपीहा रट लगाई है।
मोर वन छटा को लखकर, नृत्य करते सुहाई है।
वरष कर मेघ भी महि मे, झड़ी सावन लगाई है।।
सखी गण भाव में भरकर, नृत्य करतीं व गाती हैं।
विविध विधि साज को सज कर, प्रिया प्रीतम रिझाती हैं।
विविध वाद्यों की धुनि मधुरी, भूमि आकाश छाई है।।
अमर अम्बर से अवनी में, सुसुरभित सुमन झारे हैं।
तियन सँग प्रेम में पागे, अनुप युग छवि निहारे हैं।
नरेन्द्रहुँ हृदय हर्षित हो, धुनी जय की लगाई है।।

झूलि रहे
मिथिलाधि
कनक मणि
प्रीति प
मधुर म
सिद्धि स
नाच गा
छिटक
पावस
हरित
केकि
आद्यो
वरषि
निरखत

झूलि रहे सिद्धि सदन, प्यारी औ पियार री ।
मिथिलाधिप नन्दिनी, अवधेश के कुमार री ।।
कनक मणिन जटित बन्यो, झूला छवि सार री ।
प्रीति पगी प्राण प्राण, प्रियतम बैठार री ।
मधुर मधुर रसहिं रसे, बने हिया हार री ।।
सिद्धि सखिन संग सुखहिं, रिझवहिं रिझवार री ।
नाच गाय भाव दिखा, बाजन झनकार री ।
छिटक रही छटा चारु, रस ही रस सार री ।।
पावस पगि प्रेम पुलक, वैभव भल धार री ।
हरित साटि धारि धरा, मोदति अपार री ।
केकि कीर कोयल कल, कुहुकति सुखार री ।।
आद्‌यो आनन्द अवधि, सबहीं रस गार री ।
वरषि सुमन देव गगन, जय जय उचार री ।
निरखत नरेन्द्र निधिहिं, सर्वस निज वार री ।

झूलत हिंडोला आज, अवध नृपति नन्दन री ।
जनक नन्दिनी सँग में, सकल भुवन बन्दन री ॥
मणिमय हिंडोर पड़्यो, सुखद सिद्धि सदनन री ।
मुदित मना भ्राजि रहे, दोऊ स्वछन्दन री ॥
भूषण अरु वसन सोह, श्याम गौर अंगन री ।
चन्द्रिका किरीट शिरहिं, सोहती अमन्दन री ॥
सखिन संग सिद्धि कुँअरि, झुलावति अनन्दन री ॥
नृत्य गीत वाद्यन ते, सेवति सुख कन्दन री ।
देव देव तियन संग, गगन लखैं झूलन री ।
सुखहिं सने बरष रहे, सुमन भरि सुगन्धन री ॥
सबहीं जय जय उचार, प्राण प्राण जीवन री ।
लखि लखि नरेन्द्र निधिहिं, भूलत भव फन्दन री ॥

३४

चलो चलो देखि आवैं सजनी, सिद्धि सदन को झूला ।
झूलि रहे जहँ युगल नवल दोउ, सरहज प्रेम विवश सुख फूला ।
मणिन खचित सुवरण को झूलन, रेशम डोर छजत मन भूला ।
तहाँ सिद्धि सुख सनि बैठाई, आत्म आत्म सुख के सुख मूला ।
पान गंध स्रग धारि उतारी, मंगल आरति हर सब शूला ।
लगीं झुलावन गाइ गाइ के, पंचम स्वर अनुकूला ।
सखियाँ वाद्य बजावहिं रस भरि, आँनद बढ़त अतूला ।
युगल किशोर किशोरी जय जय, बोलहिं सब भरि भावन भूला ।
दास नरेन्द्र सराहि सुमन सुर, हनहिं दुन्दुभी वरषत फूला ॥

१

मिथिला के भाग आज झूलैं सावन के महिनवा।

झूलैं अनुराग भाग त्याग तपसी के झूलैं,

सिया के सोहाग आज झूलैं सावन...।।

सुर मुनि शिव ध्यान झूलैं, भक्ति भगवान झूलैं।

मेरे तो मेहमान आज झूलैं सावन...।।

रघुकुल कमल झूलैं, नयन प्रति फल झूलैं,

हम सब सुकृत आज झूलैं सावन...।।

दुलहा मनभावन झूलैं, सिया सँग कमला कूलै।

दोऊ सुफल आज झूलैं सावन...।।

दै दै गलबाहीं झूलैं, जुरि जुरि दृगन हँसि हूलैं।

सरस संत हिय में सदा झूलैं सावन ...।।

२

कल कल कल नाद करैं कमला की धार री,

सिया सँग झूलि रहे कौशिला कुमार री।

सन सन सन बहत सदा शीतल समीर है। शीतल..

प्रिय सखियान की दिखात बड़ी भीर है। दिखात...

हँसनि मन्द मन्द मृदुल मोद है अपार री। सिया...

हिय मणि माल लुरक, भूषण प्रति अंग में। भूण..

झुकि झुकि झुकि देत मिचक, पवन प्रीति रंग में। पवन.

लखि लखि छवि कोटि काम ह्वै रहे बलिहार री। सिया ..

छकि छकि छकि प्रेम सुधा, श्रावणी मनाय रे। श्रावणी...

सिय रघुवीर छटा, हिय में बसाय रे। हिय में...

मोहनी झलक देखि पलक नही टार री। सिया ...

३

हो मोरे प्राण झूलैं मिथिला महलिया ।
मिथिला के भूषण बसन सब मिथिला के।
निज कर पहिराई मिथिला की सखियाँ। हो मोरे...
झूलत सुरति आई व्याह के समय की,
मँड़ये के तरे तरे दीन्हो रे भँवरिया। हो मोरे...
मिथिला की सखि सब मोहि का चाय लीन्हीं,
लहँगा चुनरि धारि बनाइ के दुलहिया। हो मोरे...
मिथिला को प्रेम मोहि छिनहूँ भूलत नाहिं,
हँसत हँसावत सरहज सरिया। हो मोरे...
रस रूप लता लखि झूलन की बाँकी झाँकी,
तन मन वारि दियो, जाय बलिहरिया। हो मोरे...

४

आई श्रावण की बहार, बरषे बूँदन फुहार,
झूलैं स्वामिनी सरकार, शोभा अजब बनी।
झुलावैं रघुनन्दन सरकार, सिया को कंज मुख निहार।
हिय में हरषैं बारम्बार, रघुकुल के हैं ये धनी।
सखी सब गाती राग मल्हार, कंठ कोकिला स्वर अपार,
सिया स्वामिनी हमार, मिथिलेश की धनी।
दम्पति छवि के हैं आगार, सखी ये सुषमा के हैं सार।
देव करते जय जयकार, बजावैं दुदुभी घनी।
जानकी जीवन हर्ष अपार, जोरी अद्भुत परम उदार।
शेष पावैं नही पार जिनके सहस फनी।

झूलि रहे मन के हरनवा,

सखी री लखो सिया को सजनवा।

सरयू के तिरिया, कदम्ब की डरिया,

ताहि पै परो है झुलनवा। सखी री...

कारी कारी रतियाँ बिजुरिया चमकै,

बरषै फुहार सावनवाँ। सखी री...

गोरी किशोरी सँग हिलि मिलि झूलैं,

साँवरो सजीलो पहुनमा। सखी री...

ई रे छयलवा की बड़ी बड़ी अँखियाँ,

मारे नजर बेइमनवा। सखी री...

कारी कारी लुलफैं जुलुम करि डारैं,

निरखे न चैन परे मन मा। सखी री...

झमकि झोकि झमि झुकि झुकि झूलैं,

हूलै करेजे परनवा। सखी री...

कैसे के गोविन्द बितैवै उमरिया।

मन में बसो है मोहनवा। सखी री...

६

दोउ झूलैं कदम की डार, सावन की रितु आई।

छाये श्याम घटा चहुँ ओरा, करे मोर पपीहा शोरा।

परे रिमझिम बूँद फुहार। सावन की रितु आई...।

बाजे मृदंग अरु बीना, नाचे अलि कला प्रवीना।

पग नूपुर की झनकार। सावन की रितु आई...।

लखि युगल रूप मनहरिया, सुर करैं सुमन की झरिया।

बरषे रस मस्त अपार। सावन की रितु आई...।

हरि हरि झूलै कदम की डारी, पियरवा प्यारी रे हरी।
सिद्धि सदन में परो हिंडोरा, डोरी सुभग सँवारी, रामा।
हरे रामा, गम-गम गमके इतर गुलाल फुहारी रे हरी।।
हरित पिया पगिया शिर सोहत, हरित कदम की डारी। रामा।
हरे रामा, हरित वसन भूषन की छटा छवि न्यारी रे हरी।।
चम चम चमके दामिनि दमके, बरषे बदरा कारी रामा।
हरे रामा झूलन की छवि देखि मस्त बलिहारी रे हरी।।

८

गजब होइगा री गुइयाँ आज के झूलन मा।
सुनि कंचन वन पर्‌यो हिंडोला,
ललकि पहुँचि री गुइयाँ, भरी उमगन मा, गजब होइगा..।
गोरी सिया सँग झूलै साँवरो पहुनमा,
भटकि गई री गुइयाँ रूप कानन मा। गजब होइगा...।
चपल छबीलो छैला मुरि मुरि देखत,
भरी जादू री गुइयाँ, बाँके दृगन मा। गजब होइगा...।
करि साहस खोल्यो घूँघट को कोनमा,
बिजुरी सी कौंधी री गुइयाँ मोरे नयन मा। गजब होइगा...।
मृदु मुसकाय मोर मुख ताक्यो,
बिकाय गई री गुइयाँ तिरछी तकनि मा। गजब होइगा...।
सुधि बुधि भूलि भृंग सी मति भई,
गोविन्द देर क्यो श्याम चरण मा। गजब होइगा...।

सजनी बिलोकि आज भूषण वसन सजि,
प्यारी सँग झूलन पधारे प्यारे रसिया।
झमकि झुलत मन मुदित फुलत प्यारे,
प्यारी को निहारे देखो दिये गलबहियाँ।
जब पिया प्यारी दोउ मंद मंद मुसकत,
सखियन हिय छल छलके मधुरिया।
कारे कारे घुघुरारे केश लटकत अति,
रहि रहि रसिकन हियरो हहरिया।
नभ घन घटा छाई पवन बहै सुहाईं,
नन्ही नन्ही बुँदियन, छहर छहरिया।
कमला के कूले कूले, झूलैं दोउ फूले फूले,
कमला जनावै सेवा तरँग लहरिया।
देखि देखि मधुराई, अति सुघराई आली,
जल बिच उछरत कछप मछरिया।
जब पिय प्यारी इक एकन लखत आली,
अतिहिं लजत राघव निरखि सुघरिया।
देवन सुमन झरि, पूजत विविध विधि,
रस रूप लता कृपा दृटि की भिखरिया।
सबहिं सुकर जोरि, मागत अचरा पसारि,
चिरंजीवि रहै सिया राघव अमरिया।

६

सिद्धि सदन सखी आज, पड़ो है हिंडोर री।
झूलि रहे प्राण श्री किशोरी किशोर री।
मन्मथ मोहन राम रसाला, रस में रमी जानकी बाला,
एक एक को हृदय लगाय, रहे सखिन रस बोर री।।
सुख सुषमा श्रृंगार की मूरति, घन दामिनि सी दमकति सूरति,
दै आलोक, आकर्षत सब कहँ, आनँद मगन विभोर री।।
नृत्य गीत वर वाद्य मधुरिमा, प्रेम प्रक्रिया भाव की गरिमा,
अहै अनिर्वच अनुभव गम्या, सुर नर मुनि चित चोर री।।
पावस पति श्रावण सुठि शोभा, सेवत युगल किशोरहिं लोभा।
बरषत नन्ही बूँदन बदरा, नृत्यत मोरी मोर री।।
कुहू कुहू बोलति कोयलिया, पी पी पपिहा बोलत बोलिया,
दादुर शोर सुनै सुख दैया, वायु बहत झकझोर री।।
सेवत सिद्धि ननद ननदोई, सीताराम रसहिं में मोई।
जेहिं लखि-लखि लोने लाल लली, लहैं अनन्द अथोर री।।
झूलन कुंज छवी को वरणै, मन्मथ मोहन मोह अकरणै,
चलत न जहँ ते रसिया रघुवर, हर्षण हृदय हिलोर री।

झूलि रहे मिथिल
क्रीट चन्द्रिका शि
कजरारी अँखियाँ
काली अलकैं
मुसुकनि में फँसि
झमकि झमकि झू
लखि रस रूप लता

झूलन के झोंके
रफ्तार झूलने
पिय गोद में मुख
प्यारे भी हँस
पंचम की तान
कोयल भी कुहु
झाँकी युगल स
दिल विन्दु का भ

१०

झूलि रहे मिथिला महलिया , सिया के सँग बाँके साँवलिया।
क्रीट चन्द्रिका शिर पर राजे , कुण्डल करत किलोलिया।
कजरारी अँखियाँ दोउन की , मोह रही तिरछी तकनिया।
काली अलकैं घूँघरवारी , चमकत मानो नगिनिया।
मुसुकनि में फँसि गई री आली , हिय बिच उठत कहरिया।
झमकि झमकि झूलन दोउ झूलै , हिल मिल दिये गलबँहिया।
लखि रस रूप लता पागल भई री , चरण कमल की दसिया।

११

झूलन के झोंके जरा देना सम्हाल के।
रफ्तार झूलने की बढ़े देख भाल के।। झूलन के झोंके.....।
पिय गोद में मुख अपना, छिपाती हैं लाड़िली, छिपाती हैं लाड़िली।
प्यारे भी हँस रहे हैं रूमाल डाल के।। झूलन के झोंके.....।
पंचम की तान ले रही, गाकर सहेलियाँ, गाकर सहेलियाँ।
कोयल भी कुहुकती है, कलेजा उछाल के।। झूलन के झोंके.....।
झाँकी युगल सरकार की क्या खूब बनी है, क्या खूब बनी है।
दिल विन्दु का भी ले लिया जबरन निकाल के।। झूलन के झोंके.....।

१

झूलैं नवल हिंडोल में, मोरे प्राण के अधारी।
प्रिय हृदय धन हमारे, रघुनाथ जनक दुलारी।।
मिथिला अवध के दोनो, सत रंगिणी पताका।
सलज सिया सुख सारिणि, रघुवर चतुर चलाका।
छवि की हैं खानि दोनो, सौख्य शुचि श्रृंगारी।।
केकी व कीर कोयल, कलित कूजते हैं।
मानों मनहिं मन में, सर्वस को पूजते हैं।
सावन बरष रहा है, रिमझिम मधुर फुहारी।।
लखि लखि के छवि युगल की, सब लोग मन में फूलैं।
रोमांच अश्रु पूरित, तन मन की सुरति भूलैं।
आनँद सरस रहा है, बहती मधुर बयारी।।
भल नृत्य गान वाद्यन की, मधुमयी झनकारी।
छायी सुखद चतुर्दिक, जयकार रुचिर भारी।
सब लोग छक रहे हैं, झूलन की छवि निहारी।
सुर सहित सुरन वामा, नभ ते सुमन वरषते।
दुन्दुभि बजा बजा कर, सबके हृदय हरषते।
बलि बलि नरेन्द्र जावैं, आनन्द सनि अपारी।

झूल रहे आ
मधुर मुसुकि म
श्यामल गौर
सिद्धि सदन शु
सिद्धि सखिन स
वाद्य विविध व
उत नभ मेघ
त्रिविध वा
लखि लखि
दास नरेन्द्र

झूल रहे आत्म अधारी,
सिद्धि मन मानस विहारी।
मधुर मुसुकि मन हरत सलोने,
उर उमगत सुख भारी।।
श्यामल गौर अनूपम जोरी,
हृदय हरणि रस वारी।
सिद्धि सदन शुचि सुन्दर झूलन,
मन मोदित छवि वारी।
सिद्धि सखिन सह सुख सनि सेवति,
नाच गाय प्रियकारी।
वाद्य विविध वहु विधि भल बाजत,
मधुर स्वरन झनकारी।
उत नभ मेघ करत जल वरषा,
इतै सुगन्ध फुहारी।
त्रिविध वायु सेवत अनुकूली,
सुखमय सबहिं जना री।
लखि लखि झूलन झाँकी झलमल,
सबही होत सुखारी।
दास नरेन्द्र जयति जय उचरत,
झाँकी पर बलिहारी।

झूलत सिद्धि सदनवाँ, सखी री,
हमरे हिय के हरणवाँ।।
सिधि मन मानस विहरन वारे।
लक्ष्मीनिधि जू के नयनन तारे।
मधुर मधुर मोहनवाँ।।
सकल स्वकीय सुसम्पति धारे।
प्रेम मगन मन मुदित पियारे।
लोचन ललित लोभनवाँ।।
कृप करुणा वात्सल्य उदारे।
लालित लावण उदधि अपारे।
झूलत मुदित झुलनवाँ।।
सिद्धि सहित शुचि सखी सहचरी।
सेइ रही भल भावहिं पगि री।
तत्सुख भाव सोहनवाँ।।
नाच गाय वर वाद्य बजाई।
रिझवहिं नयन अतिथि मन भाई।
रूप राशि मन धनवाँ।।
त्रिविध वायु प्रवहति सुख मूली।
सेवति प्रकृति बनी अनुकूली।
जीवन को जीवनवाँ।।
जयजय शोर होत प्रियकारी।
मधुर वाद्य धुनि झंकृत झारी।
बरस नरेन्द्र सुमनवाँ।।

झूलन पे
सँग में
मणिमय
प्रांगण
आनँद
शुचि
शौशठव
प्रिय
श्रावण
रिमझि
शीतल
नाच
बाजे
मुसुकि
दादुर
सखिय
आनन्
सुरग
दुन्दु
लखि

झूलन पे आज शोभते, सिधि मन मानस विहारी।
सँग में अभय प्रदायक, प्रदायिनी पियारी।।
मणिमय हिंडोर अनुपम, रेशम की डोर प्यारी।
प्रांगण सिद्धि सदन के, झूला पड़्यो सुखारी।
आनँद मगन विराजे, हमरे हृदय विहारी।।
शुचि श्याम गौर शोभा, छण छण विखर रही हैं।
शौश्ठव अपार सुषमा, निर्झरित हो रही है।
प्रिय प्रेम रस को पाकर, संसार सुख बिसारी।।
श्रावण स्वकीय निधि से, सुख सन है सेव करता।
रिमझिम फुहार वरषा, चपला व मेघ ढँपता।
शीतल सुखद सुगन्धित, बहती मधुर बयारी।।
नाच नाच अरु गाकर, सखियाँ रिझा रही हैं।
बाजे विविध बजा कर, हिय हर रिझा रही हैं।
मुसुकि मुसुकि मन मोहैं, सियवर सिया पियारी।।
दादुर पपीहा कोयल, केकी व कीर भावन।
सखियाँ निकालती हैं, बोली मधुर सुहावन।
आनन्द रस समाया, छकते सभी सुखारी।
सुरगण सुमन की वर्षा, अनवरत कर रहे हैं।
दुन्दुभी बजा बजाकर, जयकार कर रहे हैं।
लखि लखि के छवी मनोरम, नरेन्द्रहुँ भये सुखारी।।

५

नवल दोउ झूलत नवल हिंडोरे।
सिद्धि सदन मन भावन झूलन।
रेशम डोर मणिनमय भूलन।
प्रेम पगे बनि भोरे।।
सिधि मन मानस हंस सुहावन।
श्याम गौर छवि धाम हरत मन।
मोदित मनहिं महा रे।।
कहत न बनै सखी कछु उपमा।
रति मनोज सत लाजत मनमा।
करत सेव सुख सो रे।।
अलिगण नाचहिं वाद्य बजावहिं।
भाव भरी गावहिं लै तानहिं।
आनँद मगन विभोरे।
सुर सुरवाम लखत छवि नभ ते।
वरषहिं सुमन दुन्दुभी हनते।
जय जय उचरत शोरे।
दास नरेन्द्र हृदय के हरनवा।
वितरत आनँद सबहिं सुघरवा।
सबहिन को चित चोरे।

सिद्धि सदन
मन मानस
सरहज प्रीति

शौष्ठव
वशीकरण

मधुरी मुसुक
सुख सुषम

वरसत बद
बिजुरी च

अरुझी
कनक ल

मोर चको
पपिहा द

आनँद
छके सब

सिद्धि सदन सुख सनवा, झूल रहे झमकि झुलनवाँ।
मन मानस के विहरन वारे।
सरहज प्रीति विवश रस गारे।
श्याामल गौर सुहनवाँ।
शौष्ठव लावण सुन्दरताई।
वशीकरण मन मोहकताई।
कहि न जाय सुख सनवाँ।।
मधुरी मुसुकनि मन की मोहनि।
सुख सुषमा श्रृंगार सुदोहनि।
लाजत लाख मदनवाँ।।
वरसत बदरा रिमझिम वारी।
बिजुरी चमकति गर्जत भारी।
भय उपजावति मनवाँ।
अरुझी सिय साजन सों ऐसे।
कनक लता तमाल तरु जैसे।
सर्वस सौंपि सुहनवा।।
मोर चकोर कीर पिक कुहकनि।
पपिहा दादुर झिंगुर झनकनि।
मनहु साम श्रुति गनवाँ।।
आनँद आढ्यो अतिशय अनुपम।
छके सबहिं लखि छटा सुखदतम।
दास नरेन्द्र शोभनवाँ।

७

झूलैं झूलैं सिधि मन मानस विहारी,
लखो री सखी, मधुर मोहनवाँ।
कल कल करत कूल कमला के।
रुचिर हिंडोल डाल अमवा के।
छवि छहरत छन छनमा।।
कज्जल कलित कोर युत नैना।
अनियारे अनुपम अति पैना।
लखि लखि करत शयनवाँ।।
सिद्धि सदल सजि साज सुहावन।
झुलवति झमकि झकोरनि झमकन।
तत्सुख भाव अमनवाँ।।
पावस प्रकृति प्रीति पगि फूली।
करति सेव सियवर अनुकूली।
रिमझिम वरष मेहनवाँ।
लखहिं लोग सब भरि नव नेहहिं।
छवि श्रृंगार सुशोभन गेहहिं।
जय कहि वाद्य बजनवाँ।
नृत्य गान सरसत सुख छायो।
चित करषत सब बलि बलि जायो।
नरेन्द्र दास सुख सनवाँ।

८

झूलत आज हो, मन मानस विहारी।।
संग सिया सुकुमारि सलोनी।
मोदित मन मुसकानि अहोनी।
फूलत आज हो. हृदय हरषत अपारी।।
सिद्धि सदन झूलन मन मोहन।
वितरत सुख निज जनन सुशोहन।
मुदित भ्राज हो, हरत हियरा हमारी।।
सारी सरहज सार सुहावन।
सेवा सरत सहज लखि आनन।
रसहिं राज हो, मधुर मुसकनियाँ डारी।।
बहु विधि वाद्य बजत प्रियकारी।
गान तान सुख साज सम्हारी।
चितवत चतुर हो, नयन कजरा सम्हारी।।
केलि विविध विधि करत झुलनवाँ।
चितय चतुर्दिक रस वरसनवाँ।
सबहिं पाग हो, सब सुरति बिसारी।।
आनँद अम्बुधि उमगि बढ़नवा।
जय जय उचरत भरि भावनवा।
वरसत सुमन हो, नरेन्द्र दास सुखारी।।

मिथिलापुर की नयन पुतरिया रे, प्रियतम सँग झूलै।
प्राण प्राण अरु जीव सगरिया रे, हँसि हँसि हिय हूलै।।
श्री विदेह कुल भूषण नागरि,
जनक सुनयना प्रीति की पागरि,
भ्रात भाभि की प्राण अधरिया रे, सुख सनि सुख फूलै।
प्राणेश्वर रघुवर की भामिनि,
परम प्रिया आत्मा अहलादिनि,
प्रीति अवधि सुख की सागरिया रे, हिय आनँद मूलै।
मिथिला अवध दुहूँ कुल तारिनि,
सहज शील सौन्दर्य श्रृंगारिनि,
बनी हार हिय सजन सँवरिया रे, उमगत हिय हूलै।
अखिल कोटि ब्रह्माण्ड अधीश्वरि,
उत्पति पालन प्रलय सुईश्वरि,
सोइ बनी मन मानस विहरिया रे, रस वितर अतूलै।
ब्रह्मादिक वर देव तियन सह,
चढ़ि विमान मन मुदित गगन महँ,
बरषहिं सुरभ सुमन झरझरिया रे, दुंदुभि अनुकूलै।
नृत्य गान वर वाद्य ते सेवा,
करहिं सखी सुख सनि रुचि लेवा,
प्रेम पगे सब जयति उचरिया रे, नरेन्द्रहुँ आनँद फूलै।

रचयिता :-

राम नरेन्द्र दास (नरेन्द्र प्रसाद तिवारी)

आत्मज-श्री राम निरंजन तिवारी

ग्राम - दलको, शहडोल (म.प्र.)

जन्म तिथि- १५.१०.१९५८

१. हिन्दी अनुसाद

  १. श्री प्रेम रामायण

  २. श्री विनय वल्लरी

  ३. श्री प्रेम वल्लरी

२. रचनायें

  १. श्री सद्‌गुरु अष्टयाम

  २. श्री आचार्य अनुषंग

  ३. झूलन बहार

  ४. वर्षोत्सव

  ५. श्री सिद्धि जन्म प्रकाश

मुद्रक : ओम ऑफसेट लाटूश रोड, लखनऊ मो0 9450973816